पाठ – 6.1

जीवन का झरना

आरसी प्रसाद सिंह

जीवन परिचय

प्रसिद्ध कवि, कथाकार और एकांकीकार आरसी प्रसाद सिंह को जीवन और यौवन का कवि कहा जाता है। इन्होंने हिन्दी साहित्य को बालकाव्य, कथाकाव्य, महाकाव्य, गीतकाव्य, रेडियो रूपक एवं कहानियों समेत कई रचनाएँ दी हैं। इनके प्रमुख कविता संग्रहों में आजकल, कलापी, संचयिता, आरसी, जीवन और यौवन, मैं किस देश में हूँ : प्रेम गीत, खोटा सिक्का, आदि हैं। सहज प्रवाह और भाव के अनुरूप भाषा के कारण इनकी रचनाओं को पढ़ना हमेशा ही दिलचस्प रहता है।

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख दुःख के दोनों तीरों से, चल रहा राह मनमानी है।
कब फूटा गिरि के अंतर में, किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बहकर आया, समतल में अपने को खींचे।
निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन सिर्फ़ एक है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।
बाधा के रोड़ों से लड़ता वन के पेड़ों से टकराता।
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।
लहरें उठती हैं, गिरती हैं, नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर में गति है, जीवन है, रुक जाएगी यह गति जिस दिन।

उस दिन मर जाएगा मानव, जग दुर्दिन की घड़ियाँ गिन गिन।

निर्झर कहता है – बढ़े चलो, तुम पीछे मत देखो मुड़कर।

यौवन कहता है – बढ़े चलो, सोचो मत क्या होगा चलकर।

चलना है केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।

मर जाना है रुक जाना ही, निर्झर यह झरकर कहता है।

शब्दार्थ :–

निर्झर – झरना; **यौवन** – जवानी; **तट–तीर** – किनारा; **मस्ती** – आनंद; **मदमाता** – मद में चूर; **गिरि** – पर्वत; **दुर्दिन** – बुरे दिन; **घड़ी** – 24 मिनट का कालखंड।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि ने जीवन की समानता, झरने से किन–किन रूपों में की है? अपने शब्दों में लिखिए।
2. कविता में आई पंक्ति 'सुख–दुःख' के दोनों तीरों से' कवि का क्या आशय है? मानव जीवन में इनका महत्व क्या है ?
3. संपूर्ण कविता में 'झरना' मानव जीवन के विभिन्न भावबोधों से जुड़ता है, कैसे? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
4. 'बाधा के रोड़ों से लड़ता' उक्त पंक्ति का आशय, जीवन को कैसे और कब–कब प्रभावित तथा प्रेरित करता है? अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'जीवन का झरना' कविता में मानव का मृत हो जाना क्यों और कब बताया गया है?
6. कविता की उन पंक्तियों को लिखिए जो मानव मन को संघर्ष के लिए प्रेरित करती हैं?

पाठ से आगे

3VUL37

1. उपर्युक्त कविता मन में आशा का संचार करती है और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। हमारे परिवेश की बहुत सी घटनाएँ हमारे मन में इसी प्रकार के भावों को जगाती हैं, उनका संकलन कर उन पर चर्चा कीजिए।

2. उपर्युक्त कविता में निर्झर, यौवन आदि प्रतीकों के द्वारा सदैव गतिशील रहने का संदेश दिया गया है। कविता से उन प्रतीकों का चुनाव कीजिए जो इसके विपरीत भाव को प्रकट करते हैं।

3. सुख और दुःख के मनोभावों से बँधा हुआ जीवन आगे बढ़ता है, हमारे परिवेश में इन भावों की अनुभूति हमें होती है। ये भाव हमारे व्यक्तित्व के विकास को कैसे प्रभावित करते हैं? अपने विचारों को तर्क सहित रखिए।

4. कविता में यह साफ झलकता है कि झरना पहाड़ के अंतर (भीतर/अंदर) से फूट कर विभिन्न बाधाओं से लड़ते हुए आगे बढ़ता है। मानव जीवन भी ऐसा ही होता है या इससे अलग? अपने विचार तर्क सहित रखिए।

भाषा के बारे में

1. निर्झर, गिरि, तीर, अंचल आदि शब्द कविता में प्रयुक्त हुए हैं जो मूलतः संस्कृत भाषा से सीधे–सीधे प्रयोग में आ गए हैं, पाठ में आए इस प्रकार के कुछ और शब्दों को ढूँढ़ कर उनसे वाक्य बनाइए।

2. **निर्झर में गति है, यौवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।**

   धुन सिर्फ़ एक है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

   कविता की इन पंक्तियों में निर्झर का मानवीकरण किया गया है। प्रकृति के उपकरणों में मानवीय चेतना का आरोपण मानवीकरण की पहचान है, जैसे–निर्झर में गति, यौवन, उसका आगे बढ़ना, मस्ती में गाना। हिन्दी साहित्य में इसे एक अलंकार माना गया है। मानवीकरण अलंकार के कुछ अन्य उदाहरण अन्य कविताओं से ढूँढ कर लिखिए।

3. कविता में आए इन शब्दों का प्रयोग करते हुए आप भी एक कविता लिखिए – यौवन, मदमाता, कूल–किनारा, जीवन, गिरि, पर्वत, भूतल, गति, करुणा, मस्ती, मानव, झरना, पछताना, अंचल, बहना आदि।

योग्यता विस्तार

1. प्रकृति के द्वारा मानव जीवन के विविध भावों को अभिव्यक्त करने वाली कविताओं को खोज कर पढ़िए और साथियों से चर्चा कीजिए।

2. जीवन में आशावादी भावों का संचार करने वाली अन्य कविताएँ खोजिए और अपने शिक्षक तथा मित्रों से चर्चा कीजिए।